पद ११९

(राग: जोगि मांड - ताल: धुमाळी)

हा दिसे स्फुरे जो आनंद। हा विषयी स्फुरे जो आनंद। न्याहाळिता तोचि ब्रह्मानंद। शोधिता पूर्ण ब्रह्मानंद।।धु.।। आत्मतेजा वृत्तितेजा। विषयप्रकाशा भेदचि नाहीं। चित्सिंधु विषयाकृति उसळे। स्वात्मशक्तिचा हा छंद।।१।। आत्मभावा सृष्टिभावा। त्रिपुटीभावा मूळ तो आत्मा। आत्मज्योति नामरूप दावी। चिद्विलास सहजानंद।।२।। चिन्मार्तांण्ड किरणीं बहुरंग हे। नाटकी चित्र नटे हा आत्मा। एक पूर्ण जवळीच प्रभु हा। सहजमुक्त सहजानंद।।३।।